

中

【最新图文版】

〔白话全本〕

原著 孔子等

国

上

古

典

文

化

文

库

季康子问：「使民敬，忠以劝，如之何？」
子曰：「临之以庄，则敬；孝慈，则忠；举善而教不能，则劝。」



以为天也。「放乎不复
文王之德之纯。」盖曰文
王之所以为文也，纯亦不
已。

四书五经

子夏曰：「贤贤易色，事父母能竭其力，事君能致其身，与朋友交，言而有信，虽曰未学，吾必谓之学矣。」



至诚之道，可以前知，国家将兴，必有祲祥，国家将亡，必有妖孽，见乎蓍龟，动乎四体，祸福将至，善，必先知之，不善，必先知之，故至诚如神。

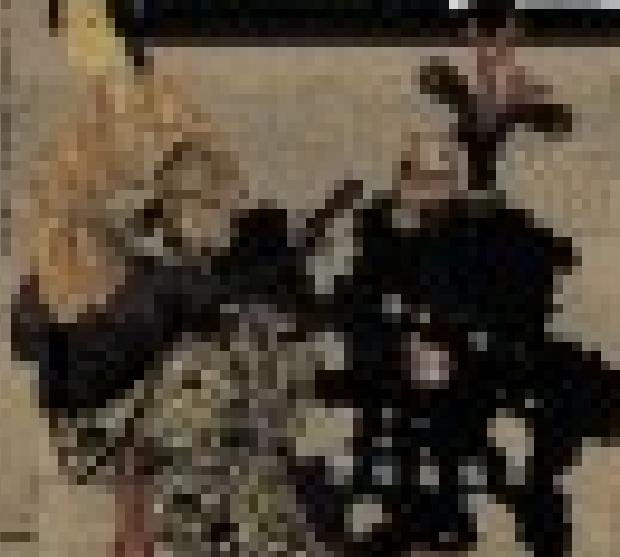
子曰：「巧言令色，鲜矣仁！」
曾子曰：「吾日三省吾身，为人谋而不忠乎？与朋友交而不信乎？传不习乎？」



京华出版社

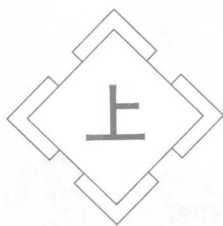
THE UNIVERSITY OF CHICAGO
PRESS

四书
五经



四书五经

孔子 / 等著 臧瀚之 / 校译



京 华 出 版 社

图书在版编目(CIP)数据

四书五经/孔子等著,臧瀚之校译. —北京:京华出版社,2003
ISBN 7-80600-822-5

I . 四… II . ①孔… ②臧… III . ①儒家 ②四书—译文
③五经—译文 IV . ① B 222.1 ② Z126.1

中国版本图书馆 CIP 数据核字 (2003) 第 108126 号

四书五经

原 著: 孔 子 / 等

校 译: 臧瀚之

策 划: 王金文 任 超 华 飞

责任编辑: 林 鸿

责任校对: 林毓丽

责任印制: 臧威威

装帧设计: 悬垦工作室

出版发行: 京华出版社

责任发行: 臧威威

印 刷: 北京瑞诚印刷有限公司

开 本: 880 × 1230mm

印 张: 45 插 页: 6

印 数: 001 - 10000

版 次: 2004年1月北京第1版第1次印刷

书 号: ISBN 7-80600-822-5/K · 12

定 价: 68.80元(上、中、下)

目 录



| | | | |
|----------------|----|-------------------|-----|
| 大学 | 1 | 孟子 | 85 |
| 中庸 | 11 | 第一卷 梁惠王(上) | 86 |
| 论语 | 23 | 第二卷 梁惠王(下) | 93 |
| 第一篇 学而 | 24 | 第三卷 公孙丑(上) | 102 |
| 第二篇 为政 | 26 | 第四卷 公孙丑(下) | 109 |
| 第三篇 八佾 | 28 | 第五卷 滕文公(上) | 116 |
| 第四篇 里仁 | 31 | 第六卷 滕文公(下) | 124 |
| 第五篇 公冶长 | 33 | 第七卷 离 娄(上) | 132 |
| 第六篇 雍 也 | 37 | 第八卷 离 娄(下) | 141 |
| 第七篇 述 而 | 40 | 第九卷 万 章(上) | 148 |
| 第八篇 泰 伯 | 43 | 第十卷 万 章(下) | 156 |
| 第九篇 子 罕 | 46 | 第十一卷 告 子(上) | 164 |
| 第十篇 乡 党 | 49 | 第十二卷 告 子(下) | 171 |
| 第十一篇 先 进 | 52 | 第十三卷 尽 心(上) | 179 |
| 第十二篇 颜 渊 | 56 | 第十四卷 尽 心(下) | 187 |
| 第十三篇 子 路 | 59 | 诗经 | 195 |
| 第十四篇 宪 问 | 63 | 国 风 | 196 |
| 第十五篇 卫灵公 | 68 | 周 南 | 196 |
| 第十六篇 季 氏 | 71 | 关 雎 | 196 |
| 第十七篇 阳 货 | 74 | 葛 覃 | 196 |
| 第十八篇 微 子 | 78 | 卷 耳 | 196 |
| 第十九篇 子 张 | 80 | 樛 木 | 196 |
| 第二十篇 尧 曰 | 83 | 螽 斯 | 197 |

目 录

| | | | |
|------------|-----|------------|-----|
| 桃 夭 | 197 | 燕 燕 | 202 |
| 兔 置 | 198 | 日 月 | 202 |
| 采 芣 | 198 | 终 风 | 202 |
| 汉 广 | 198 | 击 鼓 | 203 |
| 汝 坟 | 198 | 凯 风 | 203 |
| 麟之趾 | 198 | 雄 雉 | 203 |
| 召 南 | 199 | 匏有苦叶 | 203 |
| 鹊 巢 | 199 | 谷 风 | 204 |
| 采 芣 | 199 | 式 微 | 205 |
| 草 虫 | 199 | 旄 丘 | 205 |
| 采 蘋 | 199 | 简 兮 | 205 |
| 甘 棠 | 199 | 泉 水 | 206 |
| 行 露 | 200 | 北 门 | 206 |
| 羔 羊 | 200 | 北 风 | 206 |
| 殷其雷 | 200 | 静 女 | 207 |
| 標有梅 | 200 | 新 台 | 207 |
| 小 星 | 200 | 二子乘舟 | 207 |
| 江有汜 | 201 | 邶 风 | 207 |
| 野有死麇 | 201 | 柏 舟 | 207 |
| 何彼穉兮 | 201 | 墙有茨 | 208 |
| 驹 虞 | 201 | 君子偕老 | 208 |
| 邶 风 | 201 | 桑 中 | 208 |
| 柏 舟 | 201 | 鶉之奔奔 | 208 |
| 绿 衣 | 202 | 定之方中 | 209 |



| | | | |
|------------|-----|------------|-----|
| 蝮 蛛 | 209 | 大 车 | 218 |
| 相 鼠 | 209 | 丘中有麻 | 218 |
| 干 旄 | 209 | 郑 风 | 218 |
| 载 驰 | 211 | 缙 衣 | 218 |
| 卫 风 | 211 | 将仲子 | 218 |
| 淇 奥 | 211 | 叔于田 | 219 |
| 考 槃 | 211 | 大叔于田 | 219 |
| 硕 人 | 212 | 清 人 | 219 |
| 氓 | 212 | 羔 裘 | 220 |
| 竹 竿 | 213 | 遵大路 | 220 |
| 芄 兰 | 214 | 女曰鸡鸣 | 220 |
| 河 广 | 214 | 有女同车 | 220 |
| 伯 兮 | 214 | 山有扶苏 | 220 |
| 有 狐 | 214 | 蔣 兮 | 221 |
| 木 瓜 | 214 | 狡 童 | 221 |
| 王 风 | 215 | 褰 裳 | 221 |
| 黍 离 | 215 | 丰 | 221 |
| 君子于役 | 215 | 东门之埤 | 221 |
| 君子阳阳 | 215 | 风 雨 | 222 |
| 扬之水 | 215 | 子 衿 | 222 |
| 中谷有蓷 | 217 | 扬之水 | 222 |
| 兔 爰 | 217 | 出其东门 | 222 |
| 葛 藟 | 217 | 野有蔓草 | 222 |
| 采 葛 | 217 | 溱 洧 | 223 |

目 录

| | | | |
|------------|-----|------------|-----|
| 齐 风 | 224 | 椒 聊 | 231 |
| 鸡 鸣 | 224 | 绸 缪 | 231 |
| 还 | 224 | 杖 杜 | 232 |
| 著 | 224 | 羔 裘 | 232 |
| 东方之日 | 224 | 鸛 羽 | 232 |
| 东方未明 | 225 | 无 衣 | 232 |
| 南 山 | 225 | 有杖之杜 | 233 |
| 甫 田 | 225 | 葛 生 | 233 |
| 卢 令 | 226 | 采 芣 | 234 |
| 敝 笱 | 226 | 秦 风 | 234 |
| 载 驱 | 227 | 车 邻 | 234 |
| 猗 嗟 | 227 | 驷 骖 | 234 |
| 魏 风 | 227 | 小 戎 | 234 |
| 葛 屨 | 227 | 蒹 葭 | 235 |
| 汾沮洳 | 228 | 终 南 | 235 |
| 园有桃 | 228 | 黄 鸟 | 235 |
| 陟 岵 | 228 | 晨 风 | 237 |
| 十亩之间 | 229 | 无 衣 | 237 |
| 伐 檀 | 229 | 渭 阳 | 237 |
| 硕 鼠 | 230 | 权 舆 | 237 |
| 唐 风 | 230 | 陈 风 | 238 |
| 蟋 蟀 | 230 | 宛 丘 | 238 |
| 山有枢 | 231 | 东门之枌 | 238 |
| 扬之水 | 231 | 衡 门 | 238 |



| | | | |
|------------|-----|------------------|-----|
| 东门之池 | 238 | 狼 跋 | 246 |
| 东门之杨 | 238 | 小 雅 | 246 |
| 墓 门 | 239 | 鹿鸣之什 | 246 |
| 防有鹊巢 | 239 | 鹿 鸣 | 246 |
| 月 出 | 239 | 四 牡 | 246 |
| 株 林 | 239 | 皇皇者华 | 247 |
| 泽 陂 | 239 | 常 棣 | 248 |
| 桧 风 | 240 | 伐 木 | 248 |
| 羔 裘 | 240 | 天 保 | 248 |
| 素 冠 | 240 | 采 薇 | 249 |
| 隰有苕楚 | 240 | 出 车 | 249 |
| 匪 风 | 240 | 杕 杜 | 251 |
| 曹 风 | 241 | 鱼 丽 | 251 |
| 蜉 蝣 | 241 | 南有嘉鱼之什 | 251 |
| 候 人 | 241 | 南有嘉鱼 | 251 |
| 鸛 鸣 | 242 | 南山有台 | 252 |
| 下 泉 | 242 | 蓼 萧 | 252 |
| 幽 风 | 242 | 湛 露 | 252 |
| 七 月 | 242 | 彤 弓 | 252 |
| 鸛 鸣 | 244 | 菁菁者莪 | 253 |
| 东 山 | 244 | 六 月 | 253 |
| 破 斧 | 245 | 采 芣 | 253 |
| 伐 柯 | 245 | 车 攻 | 255 |
| 九 罭 | 245 | 吉 日 | 255 |

目 录

| | | | |
|-------------|-----|------------|-----|
| 鸿雁之什 | 256 | 蓼 莪 | 268 |
| 鸿 雁 | 256 | 大 东 | 268 |
| 庭 燎 | 256 | 四 月 | 269 |
| 沔 水 | 256 | 北 山 | 269 |
| 鹤 鸣 | 256 | 无将大车 | 269 |
| 祈 父 | 257 | 小 明 | 270 |
| 白 驹 | 257 | 钟 鼓 | 270 |
| 黄 鸟 | 258 | 楚 茨 | 270 |
| 我行其野 | 258 | 信南山 | 272 |
| 斯 干 | 258 | 甫田之什 | 272 |
| 无 羊 | 259 | 甫 田 | 272 |
| 节南山之什 | 259 | 大 田 | 273 |
| 节南山 | 259 | 瞻彼洛矣 | 273 |
| 正 月 | 261 | 裳裳者华 | 273 |
| 十月之交 | 262 | 桑 扈 | 273 |
| 雨无正 | 262 | 鴛 鸯 | 274 |
| 小 旻 | 263 | 颊 弁 | 274 |
| 小 宛 | 264 | 车 辖 | 274 |
| 小 弁 | 264 | 青 蝇 | 275 |
| 巧 言 | 265 | 宾之初筵 | 275 |
| 何人斯 | 265 | 鱼藻之什 | 276 |
| 巷 伯 | 267 | 鱼 藻 | 276 |
| 谷风之什 | 267 | 采 菽 | 276 |
| 谷 风 | 267 | 角 弓 | 277 |



| | | | |
|------|-----|------|-----|
| 莞柳 | 278 | 生民之什 | 288 |
| 都人士 | 278 | 生民 | 288 |
| 采芣苢 | 278 | 行苇 | 288 |
| 黍苗 | 279 | 既醉 | 289 |
| 隰桑 | 279 | 鳧鷖 | 289 |
| 白华 | 279 | 假乐 | 289 |
| 绵蛮 | 279 | 公刘 | 290 |
| 瓠叶 | 280 | 洞酌 | 290 |
| 渐渐之石 | 280 | 卷阿 | 291 |
| 苕之华 | 280 | 民劳 | 292 |
| 何草不黄 | 280 | 板 | 292 |
| | | 荡之什 | 293 |
| 大雅 | 281 | 荡 | 293 |
| 文王之什 | 281 | 抑 | 294 |
| 文王 | 281 | 桑柔 | 295 |
| 大明 | 282 | 云汉 | 296 |
| 绵 | 283 | 崧高 | 298 |
| 棫朴 | 283 | 烝民 | 298 |
| 旱麓 | 283 | 韩奕 | 299 |
| 思齐 | 285 | 江汉 | 300 |
| 皇矣 | 285 | 常武 | 300 |
| 灵台 | 286 | 瞻仰 | 301 |
| 下武 | 286 | 召旻 | 302 |
| 文王有声 | 287 | 颂 | 303 |

目 录

| | | | |
|-------------|-----|--------------|-----|
| 周 颂 | 303 | 闵予小子之什 | 307 |
| 清庙之什 | 303 | 闵予小子 | 307 |
| 清 庙 | 303 | 访 落 | 307 |
| 维天之命 | 303 | 敬 之 | 308 |
| 维 清 | 303 | 小 毖 | 308 |
| 烈 文 | 303 | 载 芟 | 308 |
| 天 作 | 304 | 良 耜 | 308 |
| 昊天有成命 | 304 | 丝 衣 | 309 |
| 我 将 | 304 | 酌 | 309 |
| 时 迈 | 304 | 桓 | 309 |
| 执 竞 | 304 | 赉 | 310 |
| 思 文 | 304 | 般 | 310 |
| 臣工之什 | 305 | 鲁 颂 | 310 |
| 臣 工 | 305 | 駉 | 310 |
| 噫 嘻 | 306 | 有 駉 | 310 |
| 振 鹭 | 306 | 泮 水 | 311 |
| 丰 年 | 306 | 閟 宫 | 312 |
| 有 瞽 | 306 | 商 颂 | 313 |
| 潜 | 306 | 那 | 313 |
| 雍 | 306 | 烈 祖 | 315 |
| 载 见 | 307 | 玄 鸟 | 315 |
| 有 客 | 307 | 长 发 | 315 |
| 武 | 307 | 殷 武 | 316 |



| | | | |
|-----------------|-----|-----------------|-----|
| 尚书 | 317 | 盘庚上 | 346 |
| 尚书序 | 318 | 盘庚中 | 349 |
| 虞书 | 320 | 盘庚下 | 350 |
| 尧典 | 320 | 说命上 | 351 |
| 舜典 | 322 | 说命中 | 352 |
| 汨作九共九篇稟饩 | 326 | 说命下 | 353 |
| 大禹谟 | 326 | 高宗彤日 | 354 |
| 皋陶谟 | 329 | 西伯戡黎 | 354 |
| 益稷 | 330 | 微子 | 355 |
| 夏书 | 333 | 周书 | 356 |
| 禹贡 | 333 | 泰誓上 | 356 |
| 甘誓 | 336 | 泰誓中 | 357 |
| 五子之歌 | 337 | 泰誓下 | 358 |
| 胤征 | 338 | 牧誓 | 359 |
| 商书 | 339 | 武成 | 360 |
| 汤誓 | 339 | 洪范 | 361 |
| 仲虺之诰 | 339 | 旅獒 | 365 |
| 汤诰 | 340 | 金縢 | 365 |
| 伊训 | 342 | 大诰 | 368 |
| 太甲上 | 343 | 微子之命 | 369 |
| 太甲中 | 344 | 康诰 | 370 |
| 太甲下 | 345 | 酒诰 | 373 |
| 咸有一德 | 345 | 梓材 | 375 |
| | | 召诰 | 376 |

目 录

| | |
|------------------|------------|
| 洛 诰 | 379 |
| 多 士 | 382 |
| 无 逸 | 383 |
| 君 奭 | 385 |
| 蔡仲之命 | 388 |
| 多 方 | 388 |
| 立 政 | 391 |
| 周 官 | 393 |
| 君 陈 | 394 |
| 顾 命 | 396 |
| 康王之诰 | 399 |
| 毕 命 | 399 |
| 君 牙 | 401 |
| 冏 命 | 401 |
| 吕 刑 | 402 |
| 文侯之命 | 406 |
| 费 誓 | 406 |
| 秦 誓 | 408 |
| 礼 记 | 409 |
| 曲礼上 | 410 |
| 曲礼下 | 421 |
| 檀弓上 | 428 |
| 檀弓下 | 442 |
| 王 制 | 456 |

[四书]

大学



大学教人的目的,在于让人明白仁义礼智信这些美德的含义,在于让人革除原来的恶习而有维新振作的气象,最终达到善的最高境界。

知道了所要达到的最高境界,志向就能稳定。志向稳定之后内心才能镇静,内心镇静之后身体在任何环境下都能安定,身体安定之后办事时谋划就能精当,谋划精当做事就会成功。

事物都有根本和末节,做事都是有先有后。明白做事时要先从根本做起,最后处理末节小事,这离大学的道理就差不太远了。

古人想让天下人都明白美德的含义,必定先去治理好他的国家;想要治理好他的国家,必定先管理好自己的家庭;想要管理好自己的家庭,必定先修养自身的品德;想要修养自身的品德,必定先端正自身的思想;想要端正自身的思想,必定先使意念诚实;想要使意念诚实,必定先获取丰富的知识。获取知识的途径就是研究天下形形色色的事物。

天下万物的义理能够推想得明白透彻,然后知识就丰富了;知识丰富之后,所发出的意念就会诚实了;意念诚实,思想也就端正不偏邪了;思想端正就不会受到外物诱惑,品德修养也就完善了;品德完善可为一家人的表率,整个家庭就会得到治理了;家庭能治理好,也就能治理好国家了;国家能治理好之后,整个天下也就能治理好了。上自天子,下至百姓,都要把修身作为根本。假如一个人不能修养好自身,他的根本就会紊乱,就不可能做到齐家治国平天下。应被重视的根本却被忽略,次要的末节反被看重,古代哪有这样的人呢?

[以上的一章经文,是孔子说的话,由曾参叙述。以下的传文共十章,都是曾参的意见,由他的门人记述。旧本字句排列有很多错误,现在按照程颐先生的校订,并参考经文,另外整理好次序如下。]

《尚书·康诰》说:“只有我们的文王能够显扬美德。”《尚书·太甲》说:“上天赋予了我们美德,像命令一样,只有我们的成汤时时照看这个命令。”《尚书·尧典》说:“只有我们的尧帝,能够显扬至大的美德。”以上三本书都说自己要显扬美德。

[以上是传文的第一章,解释“明明德”。]

商汤用的浴盆上，刻着几句话，说：“我们洗心，同洗身一样，如果一天洗除积垢，奋发自新，应当天天去洗濯它，使得新的更新。要永久这样，绝不间断。”《尚书·康诰》说：“商朝的人虽杂有旧习，但要鼓励他们弃旧自新。”《诗经·文王》说：“我们周朝，从后稷传到现在，年代很久。虽是一个旧邦国，但到了文王时，能够自新新民，国家从此更新。”因此君子都是学习前人，用尽心力使民众自新。

[以上是传文的第二章，解释“新民”。]

《诗经·玄鸟》说：“天子居住的地方，叫邦畿，广阔约有千里。天下的人，都向往这个极好的所在。”《诗经·绵蛮》说：“叫得好听的黄鸟，栖息在树林茂盛、网罗不到的好地方。”孔子读到这句诗叹息道：“这一只黄鸟，也能够选择一个好地方，而人却不知选择好地方居住，难道还不如鸟吗？”

《诗经·文王》说：“肃穆深远的文王呀，道德常常光明，做事小心恭敬。”文王在歧邑做国君的行候，施行仁政以造福百姓；在殷朝作臣子的时候，忠于职守以爱国；在家作儿子的时候，能孝顺父母继承先业；做父亲的时候，对子女又能慈爱；与他人交往的时候，又能保持诚实。

《诗经·淇奥》说：“看那淇水弯曲的所在，绿色的竹子美丽茂盛。我们有文采的君子，好像切磋了的象牙，好像琢磨了的美玉。他的内心啊，一定是庄重而严密；他的外表啊，那么威风凛凛。这样文采风流的君子，永远也不能遗忘。”“如切如磋”是形容君子的精心求学，“如琢如磨”是形容君子的严密自修，“瑟兮侗兮”是讲君子把严肃敬重的情感保存在内心，“赫兮喧兮”是讲君子的光辉表现在身外。“有斐君子，终不可喧兮”是讲君子从学问自修上用功，他的德行才能够达到至善，天下人民当然牢记不忘了。

《诗经·烈文》说：“啊！前代的文王武王使人忘记不得呀！”后代的好帝王遵守前王治国的好法制，并且守护着前王传下的大基业。后代的小百姓，安享着太平的幸福，沾染着前代的恩泽。前王的功德这样盛大，人民又怎会忘记他们呢？

[以上是传文的第三章，解释“止于至善”。]